OM 22 MAHARASHTRA final_Page 1 and 2 18/02/2015 17:49 Page 11

अतिरंजना करना ठीक नहीं

हम अकेले पैदा होते हैं, अकेले जीते हैं और अकेले मरते हैं, केवल हमारे अस्थायी संबंधों के माध्यम से हम कुछ क्षणों के लिए यह भ्रम पैदा कर सकते हैं, कि हम अकेले नहीं हैं।.....-ज्योर्ज ओर्सन वेल्स।

यह संसार एक बहुत बड़ा मायाजाल है, जहां हम सभी अवास्तविक और अव्यावहारिक लोगों से घिरे हुए रहते हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि हममें से कोई भी आज ऐसा नहीं है जो अपना जीवन यथार्थवादी ढंग से जी रहा हो। इसका मूल कारण है हम सभी के भीतर छुपी अतिश्योक्ति करने की बुरी आदत या यूँ कहें कि हर छोटी बात को बढ़ा-चढ़ाके प्रस्तुत करने का हमारा गलत आचरण। अपने आप से पूछें कि हम दिन भर में किसी भी बात को बिना मिर्च मसाला डाले कितना प्रस्तुत कर पाते हैं? चाहे किसी नए सिनेमा की कहानी को सुनाते वक्त या अपनी उपलब्धियों के बारे में किसी को बताते हुए या फिर किसी के व्यक्तिगत जीवन के रहस्यों को साझा करते समय, इन सभी स्थितियों में हम कितना ना मसाला भर-भरके सामने वाले को रोचक कथा सुनाते हैं, है ना? अवश्य!! क्योंकि तथ्यों को गुणा करके उनको और बढ़ा-चढ़ाके प्रस्तुत करना यह तो बड़ा आसान काम है जिसमें अधिकांश स्वाभाविक रूप से हमारी आदत अनुसार हमसे होता रहता है। पर एक प्रश्न यहाँ अवश्य मन में उत्पन्न होता है कि तथ्यों को खींच-खींचकर लम्बा करना इतना भी क्या प्रलोभक है? क्या वास्तविकता इतनी दिलचस्प नहीं है जो हम इतनी लम्बी खिंचाई में अपना और दूसरों का समय बर्बाद करते हैं? या फिर अपनी बात बहुतों तक पहुँचाने का यह कोई सरल तरीका है? कारण जो भी हो, परन्तु हकीकत तो यही है कि जब हम बातों को बेवजह बढ़ा-चढ़ाके प्रस्तुत करते हैं तब वह हमारे एवं अन्यों के मन में बड़ी उलझन पैदा कर देती है। परिणामस्वरूप फिर हमारे रिश्ते तनावपूर्ण हो जाते हैं। अत: हमें इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि जब-जब हम किसी बात में अतिश्योक्ति करते हैं, तब हम वास्तविकता को विकृत कर देते हैं और हमारे इस कर्म को धोके के रूप में देखा जाता है, जिस वजह से हमारे जीवन में अविश्वास पैदा होता है और अंतत: हम दूसरों की घृणा का पात्र बन जाते हैं। तभी ही कहा गया है कि एक झूठ छुपाने के लिए और 100 झूठ का सहारा लेना पड़ता है। अब इस आदत को जिसे कई लोग एक हानिरहित आदत समझते हैं, इसका इलाज करने का सहज उपाय क्या है? क्या इतने वर्षों से पड़ा हुआ अतिरंजना का संस्कार इतनी सरलता से निकल सकता है? अनुभव कहता है कि कभी-कभी या प्रासंगिक ढंग से लोगों को हंसाने के लिए या तंग वातावरण को हल्का करने के लिए अतिरंजना करना ठीक है, परन्तु हद से ज्यादा इस चीज़ को करना वह फिर हानिकारक सिद्ध हो सकता है।

इसलिए एक बात सदैव याद रखें कि हमें अपनी करने के लिए उसे बढ़ा-चढ़ाकर बोलने की आवश्यकता नहीं है, इसके बजाय हमें यथार्थवादी होने का अभ्यास करना चाहिए। तो! आज से ईमानदार और विश्वसनीय बनने पर ज़ोर दें, जिससे फिर आप सभी के सम्मान का पात्र बन जायेंगे।

आने वाले सुबह की तैयारी...

-पेज १० का शेष..

जीवन में जिसको भी देखा सभी में कुछ न कुछ स्वार्थ था। सम्बन्धों की पृष्ठभूमि में आप अपने जीवन में उस सम्बन्ध को तलाशते रहे जो कभी भी आपसे कुछ ऐसी मांग ना करे और संतुष्ट रहे। लेकिन कोई मिला शायद नहीं! कारण क्या? कि सभी की सोच एक दायरे वाली थी। सभी पैसे से लेकर शादी तक ही सोचते, उसे जीवन का कर्म मानते थे, जीवन की विद्या मानते रहे। परन्तु यह अधूरापन था। तभी तो आप सबकुछ करने के बाद भी खालीपन के साथ रहे। इस खालीपन में सबसे पहले तो मुझे अपने आपको अपना सबसे अच्छा सम्बन्धी बनाना पड़ेगा और उस सम्बन्ध को जो कि खुद 'स्वयं' ही है को भरने वाला और कोई नहीं, एक ऐसी शक्ति हो सकती है जो स्वयं की तरह ही हो और स्वयं का रूप जैसे बिन्दू स्वरूप है, निराकार है, वैसे हमारे इस बिन्दू स्वरूप को, जो हम सबका विश्वपिता है वो भी निराकार है के द्वारा मिल सकता है। जिसे हम सभी विस्तार की सीमा से भी परे, असीमित कहते हैं, वो सम्बन्धी ही हमें सन्तुष्टता प्रदान कर सकता है, हमारे अंदर के घावों पर मरहम लगा सकता है।

संतुष्टता का एहसास:- आप जैसे ही अपने आप से, खुद से जुड़ते हैं, मिलते हैं, वार्तालाप करते हैं, आपका वह खालीपन जाता जायेगा। आप अपने आप से संतुष्ट महसूस करेंगे। आपकी जो भी विशेषतायें हैं, वो आपकी मदद करेंगी उन लोगों को समझने में जो आपको नज़रअंदाज़ करते थे। अब आपकी विशेषतायें (स्व की, जिसमें ज्ञान व अनुभव तथा आनंद व शांति) ये सब आपको नई पीढ़ी से जोड़ेगी और सब हम उम्र वैसे ही आपसे जुड़े रहेंगे। यह संतुष्टता गुणों के चिंतन से आती जाती है।

आने वाली सुबह की मांग:- सभी घर के सदस्यों ने आपसे हमेशा अपनी-अपनी शर्तें रखीं कि मुझे ये चीज़ें चाहिए तो आपने उन्हें उन चीज़ों को उपलब्ध कराया। वैसे ही आने वाली सुबह जिसे स्वर्णिम सुअवसर कह सकते हैं, जहाँ सभी सुखी होंगे और आपको किसी की कोई चिंता नहीं होगी, वह भी आपसे कुछ मांग रही है। जैसे रिटायर होने के बाद आपके पास आगे के जीवन यापन के लिए पेंशन मिलती है और आपको कोई चिंता नहीं होती, वैसे ही यदि आप चाहते हैं कि आपको एक जीवन तो क्या आने वाले अनेकों जीवन को चलाने के लिए परमात्मिक पेंशन मिले, इसके लिए आपको क्या करना होगा कि जैसे आपने अपने परिवार के लिए सबकुछ न्यौछावर कर दिया, अपनी ज़िन्दगी के 50-55 साल दे दिए वैसे ही इस परमात्मिक कार्य में, स्वर्णिम सवेरा लाने के कार्य में आपको बचे हुए कुछ साल देने हैं। करना कुछ नहीं है बस अपनी स्व-स्थिति को शक्तिशाली बनाना है। किसी के बारे में कुछ भी भविष्य के लिए नहीं सोचना है कि मेरे बच्चे का क्या होगा? अर्थात् जो जैसा कर्म करेगा, उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी, बस ऐसा ही चिंतन करना है तो चिंता वैसे ही समाप्त होती जाएगी। तो मैं क्यों व्यर्थ चिंतन करूँ? व्यर्थ अर्थात् भूत और भविष्य से मुक्त होकर आप अपने वर्तमान को श्रेष्ठ बनाइए। आप सभी को वही संदेश देने भी लगेंगे। चूंकि साठ साल तक तो कभी ध्यान नहीं दिया, परन्तु अब ऐसे कार्य करेंगे तो कभी मन उदास भी होगा, लेकिन आप अपने उस काम को ज़ारी रखेंगे। सुबह उठेंगे, विश्वपिता से अपना सम्बन्ध जोड़ेंगे, जो हमारा पहला सम्बन्धी है, तो सर्व सम्बन्धों से हमें वैसे ही निज़ात मिल जायेगी। वो सारे सुख हमें एक से ही मिल जाएंगे। फिर आपको किसी की तलाश नहीं रहेगी और आपका सवेरा बहुत सुंदर होगा..... **-ब्र.कु. अनुज,दिल्ली**

वर्धा-सिंदी रेलवे। नवनिर्वाचित विधायक समीर कुणावार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु।

रतलाम-शास्त्री नगर। नवनिर्वाचित महापौर डॉ. सुनीता थार्दे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सविता। साथ हैं ब्र.कु. संगीता तथा अन्य।

श्रीरामपुर-महा.। स्नेह मिलन एवं सम्मान समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलन करते हुए पूर्व मंत्री अप्पा साहेब मस्के, नराध्यक्ष ससाजे ताई, माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. गंगाधर व ब्र.कु. बालू, ब्र.कु. मंदा तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

परभणी-महा.। '7 बिलियन एक्ट्स ऑफ गुडनेस' के अंतर्गत डॉक्टर्स तथा मेडिकल वालों के लिए 'मेडिटेशन तथा मेडिसीन' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए नगराध्यक्ष विशाल कदम, वकील संघ अध्यक्ष माधवराव भोसले, गुरूबुद्धि संस्थान अध्यक्ष डॉ एस. वाघमारे, डॉ. मल्हार देशपांडे, ब्र.कु. प्रणिता, ब्र.कु. अर्चना तथा अन्य।

नवी मुम्बई। बौद्ध भिक्षुओं को ईश्वरीय संदेश देने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. बहनें।

नेवासा-महा.। ज्ञान-विज्ञान प्रदर्शनी के कार्यक्रम में व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का अवलोकन करने के बाद समूह चित्र में शिक्षण अधिकारी सामलेटी बहन, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. वंदना, कुरे जी तथा अन्य।